Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XIV, Issue No. 1, October-2017, ISSN 2230-7540

कँवलनयन कपूर काव्य-संग्रह

Dr. Hemlata Sharma*

Assistant Professor, J. C. College, Assandh, Karnal, Haryana

----------X----------

आलोच्य कवि कँवलनयन कपूर हिन्दी साहित्य के उभरते हुए साहित्यकार हैं, पंजाबी भाषी होते हुए भी इनका हिन्दी से अनन्य प्रेम है। काव्य–साधना इनकी प्रमुख साधना है। साहित्य की लगभग सभी विधओं पर यह अपनी लेखनी चला रहे हैं, परन्तु काव्य से इन्हें आरम्भ से ही विशेष स्नेह रहा है, इसी कारण हम इनके काव्य को जीवन और व्यक्तित्व से जोड़ सकते हैं। कवि रूप में इनकी दृष्टि पैनी है इसलिए इन्होंने काव्य में देश–समाज से जुड़े अनेक विषय लिएं है और यथा संभव कवि धर्म निभाने का प्रयास भी किया है। कँवलनयन कपूर ने अपने जीवन में आरम्भ से ही अनेक कष्टों का सामना किया और सारा जीवन कठिनाइयों से संघर्ष कर जीवन के वास्तविक आयाम को कृया। इसी कारण इनके काव्य को पढ़कर यह अनुभूति होती है कि इनके भीतर का दर्द मानो इनकी वाणी कृकर जीवंत हो उठा है। ऐसे लोग बहुत कम हैं जो इनके दर्द को समझ सकते हैं। जिस प्रकार सोना आग में तपकर निखरता है, उसी प्रकार श्री कँवलनयन कपूर भी जीवन में आए कष्टों को झेलकर अपने वास्तविक कवि रूप कृ सके। इसी कारण वह व्यक्तित्व से ही कवि नहीं थे, अपितु उनके जीवन का प्रत्येक क्षण काव्यमय है। इनके काव्य में जीवन के हर पहलू को उठाया गया है। कहीं यह मानव के स्वार्थीपन से दुःखी होकर 'केंचुली सी याद', 'मित्रा के नाम' जैसी कविताए लिखते हैं तो कहीं प्रेम के संयोग और वियोग दोनों पक्षों का वर्णन करते हैं। आज के भौतिकतावादी युग में मनुष्य निरन्तर स्वार्थी होता जा रहा है, वही प्रेम जैसा उदात्त भाव भी अपनी महत्ता खोता जा रहा है।

3.1 काव्य का स्वरूप :

काव्य का स्वरूप बड़ा व्यापक है। काव्य जितना व्यापक है, उतना ही सूक्ष्म भी है। अतः इसे लक्षण की परिधि में बांटना, अत्यन्त कठिन कार्य है। काव्य की व्यापकता का स्थूल प्रमाण तो यही है कि संसार के सभी देशों जातियों में प्रारम्भ से ही काव्य, किसी–न–किसी रूप में कृया गया है। न तो सभ्य समाज इसे केवल अपनी सम्पति कह सकता है और न ही शिक्षित समाज इसे अपनी बकौती। केवल सभ्य समाज या शिक्षित मानव ही इसके सर्वेसर्वा नहीं हैं, बल्कि असभ्य और अशिक्षित मानव भी इसके अधिकारी हैं। इसका प्रधान कारण यह है कि विज्ञान की उन्नत दशा में भी जीवन के लिए काव्य की वही उपयोगिता है, जो शहरों के पक्के मकानों में रहकर भी प्रकृति की होती है। काव्य अन्त्स का रहस्योद्घाटन करता है। मानस प्रेरणायें काव्य द्वारा दी जाती हैं। इसलिए जीवन के लिए काव्य की अत्यन्त आवश्यकता है। काव्य का विषय एवं वस्तु भी निष्पक्षतः जीवन ही है। जीवन के अभाव में काव्य का अस्तित्व ही समाप्य है।

3.2 काव्य का अर्थ :

प्राचीनकाल में काव्य और साहित्य परस्पर पर्यायवाची थे, किसी भी छन्दोब रचना को काव्य कहा जाता था, चाहे उसका सम्बन्ध वैद्यक, गणित, ज्योतिष आदि किसी भी विषय से हो। रसात्मकता को चिह्नित किए जाने के बाद से ही रसानुभूति युक्त अभिव्यक्तिमय रचना के लिए काव्य शब्द निश्चित हो गया है। आज पुनः काव्य का अर्थ लयात्मक, अभिव्यक्ति है और साहित्य का अर्थ गयात्मक अभिव्यक्ति के रू॰ में विशिष्टताबद्ध हो गया है। साहित्य अथवा काव्य क्या है और क्या नहीं? इसे निर्धारित करने के लिए काव्य लक्षणों की सहायता ली जा सकती है। इसके तीन लक्षण हैं।

1. स्थायित्व
2. व्यक्तित्व का प्रतिपफलन
3. रागात्मकता

स्थायित्व का तात्पर्य है–साहित्य की शाश्वता। कोई साहित्यिक कृति दूसरी के आ जाने पर गौण या असम्बद्ध नहीं हो जाती, उसका अपना सौन्दर्य या महत्व अक्षुण्ण बना रहता है। दर्शन, विज्ञान आदि में ऐसा नहीं है, दूसरे साहित्य में प्रतिकार के व्यक्तित्व का प्रतिपफलन अनिवार्यतः होता है। वह अपने परिवेश जाति और संस्कारों की अमिट छाप कृति पर प्रत्यक्षतः या परोक्षतः अवश्य छोड़ता है। यह कृति की अद्वितीयता है। तीसरा लक्षण है रागात्मकता की स्थिति, जिसके बिना साहित्य, साहित्य नहीं हो सकता। रागात्मकता अनुभूति और भावों की अभिव्यक्ति से संचारित होती है। बौद्धिकता होते हुए भी काव्य या साहित्य रागात्मकता से शून्य होना चाहिए। काव्य के स्वरूप का एक शब्दीय सटीक निदर्शन दुस्साध्य है। अतः इसे विभिन्न परिभाषाओं के आधार पर ही समझा जा सकता है।

3.3 काव्य सम्बन्धी विद्वानों की परिभाषाए :

काव्य–स्वरूप सम्बन्धी विद्वानों ने अपने भिन्न–भिन्न मत दिए हैं, जैसे भामह ने शब्द और अर्थ के सहभाव को काव्य माना है। वहीं दण्डी का मानना है, इष्ट अर्थ से विभूषित पद समूह ही काव्य है। मम्मट ने काव्य के स्वरूप को निर्दिष्ट करते हुए कहा है– तद्दोषो शब्दार्थौ सगुणावनलंकृति पुनः क्वापि। अर्थात् शब्द एवं अर्थ का समुदित स्वरूप काव्य है, जहा दोषों का अभाव हो गुणों का सद्भाव हो तथा सर्वत्रा अलंकार की स्थिति हो। वहीं आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी मानते हैं कि कविता प्रतिभाशालिनी रचना है जो कृठक या श्रोता के मन पर

www.ignited.in

आनन्ददायी प्रभाव डालती है। पंत कविता को परिपूर्ण क्षणों की वाणी मानते हैं। वर्डसवर्थ शांति के समय संचित प्रबल अनुभूतियों के सहज एवं उकृम उद्रेक को कविता मानते हैं। उपर्युक्त अनेकानेक परिभाषाओं से स्पष्ट है कि कविता कल्पना और भावना के माध्यम से जीवन की व्याख्या है। काव्य की पूर्ण व्याख्या सम्भव नहीं है, क्योंकि यह एक नित्य परिवर्तित विकसित होने वाला वाघ्मय है।

3.4 काव्य का महत्व :

कवि युग प्रवर्तक है। वह अपने युग को अपने काव्य में उतार लेता है। कवि का कार्य केवल सत्य तक सीमित नहीं है। वह शिवम् का भी अन्वेषण करता है। वह सुन्दरम के माध्यम से युग के सत्य को शिवत्व की ओर प्रेरित करता है। सत्य और शिव दोनों उसकी चेतना के समक्ष सुन्दरम का रूप धारण करके आते हैं। वस्तुतः कविता मानवता की साधना करती है। क्योंकि कविता के मूल में सार्वजनिकता निहित होती है।

3.5 काव्य–तत्व :

कविता की अनेकानेक परिभाषाओं से काव्य के केन्द्रीय अभिलक्षणों के साथ उसके आधारभूत तत्वों के संकेत भी मिलते हैं। काव्यशास्त्रियों ने कविता के प्रमुख तत्वों के बारे में विश्लेषण करते हुए ऐसा अनुभव किया है कि सृष्टि में उपलब्ध सब कुछ काव्य–सामग्री के रूप में स्वीकृत है। भामह ने लिखा है–

न स शब्दों न तद् वाच्यं न तच्छिल्पं न सा क्रिया।

जायते यन्न काव्यांगम् अहो भारो महान् कवेः।।

संसार में ऐसा कोई भी ऐसा शब्द, अर्थ, शिल्प और क्रिया शेष नहीं, जो कविता का अंग बन कर काव्य और कवि दोनों को उपकृत न करे। कवि को अकृर काव्य संसार का निर्माता कहा गया है। लेकिन अपने आस–कृस उपलब्ध सभी विचारों, अनुभूतियों, कल्पनाओं और संवेदनाओं को मूर्त करने के लिए जिन तत्वों पर रचनाकार आश्रित होता है, उन्हीं तत्वों को काव्य–तत्व के रूप में वर्णित किया गया है। काव्य के चार केन्द्रीय तत्व स्वीकार किए गए हैं– बुद्धि, भाव, कल्पना और शैली।

बुद्धि तत्व :

अपने उद्भव काल से ही कविता में विचार की उपस्थिति रही है। इसी कारण काव्य में बुद्धि तत्व की अनिवार्यता स्वीकारी गई है। कोई भी कविता बिना बौद्धिक–वैचारिक आधार के प्रभावशाली (नहीं होती, किन्तु केवल बुद्धि तत्व, काव्य का विधान नहीं कर सकता। इसका उपयोग कभी भावों के पृष्ठाधार के रूप में, तो कभी भावों को अधिकाधिक स्पष्ट करने के लिए कविता में होता है। हरिश्चन्द्र वर्मा के अनुसार– कविता के अन्तर्गत विचारों का प्रस्थान बिन्दु के रूप में प्रयोग एक एकांगी ह्रासशील प्रवृति को जन्म देता है . . .। वस्तुतः कविता निरा विज्ञान या दर्शन नहीं है। निश्चय ही विचार की एक तराश, एक धार कविता में रहती है। बुद्धि तत्व के सहारे ही काव्य और काव्यकार की वैचारिक प्रतिबद्धता उजागर होती है। कवि अपनी बुद्धि और प्रतिभा क्षमता का उपयोग कल्पना और भावों की ललित अभिव्यक्ति के लिए करता है। यह बुद्धितत्व ही है, जिसके सहारे कवि और उसकी कविता सदियों तक पहुंचती है। बुद्धि तत्व के कारण ही कविता में चिन्तन और दर्शन के विविध आयाम उपस्थित होते हैं। इसी कारण कविता को वैचारिक आधार प्रदान करने में समर्थ बुद्धि तत्व की प्रधानता मानी गई है।

भाव तत्व : कविता में एकत्रा रस, संवेदना और सुख–दुःख के सारे अवयव भावों के कारण ही रेखांकित होते हैं। भावों को कवि सम्प्रेषित करते हैं और भावों का ही लोक–उदय में साधारणीकरण होता है। भावानुभूति और भाव प्रस्तुति के बिना हम कविता के अस्तित्व की कल्पना भी नहीं कर सकते। इसलिए अधिकांश कवियों और आचार्यों ने कविता को सम्पूर्णतः भाव व्याकृर ही माना है। रामेश्वरलाल खण्डेलवाल का मानना है कि – काव्य–वस्तु का समस्त प्रासाद भाव की नींव पर पड़ा होता है।

कल्पना तत्व : काव्य का तीसरा महत्वपूर्ण तत्व कल्पना तत्व हैं। कल्पना को कवि की निर्मात्री प्रतिभा का वैशिष्ट्य बताया गया है, जबकि पश्चिम के काव्य चिन्तकों ने कल्पना के काव्य सृजन का सबसे महत्वपूर्ण तत्व माना है। कल्पना के कारण कविता में रोचकता और भव्यता का आह्वान होता है। कवि की रम्य कल्पना ही उसके सृजन को औरों से पृथक् करती है। सौन्दर्य और लालित्य का विधान करने वाली यह कल्पना ही कवि की मौलिकता का आधार है। कल्पना के माध्यम से कवि अपनी रचना में नए–नए चित्रों और बिम्बों के उपस्थित करता है। कविता को ग्रहण करने वाला भी कल्पना के सहारे ही उन चित्रों और बिम्बों को स्वीकारता है। यदि कवि और सहृदय के बीच कल्पना का विलक्षण सेतु न रहे, तो कविता की अभिव्यक्ति उद्देश्यहीन रह जाएगी। भावों और विचारों को सही दिशा में सम्प्रेषित करना कल्पना के सहारे ही सम्भव होता है। इसलिए कल्पना तत्व को कविता की श्रेष्ठता, मौलिकता और सजीवता का आधार कहा गया है।

शैली तत्व : काव्य का अभिव्यक्ति पक्ष शैली के उपकरणों से सम्बद्ध रहता है। भारतीय काव्यशास्त्रा में शैली की महिमा को पहचान कर ही वामन ने विशिष्ट पद रचना कोकाव्य की आत्मा घोषित किया था। शैली के पर्याय 'रीति' शब्द की व्यापक व्याख्या आचार्यों ने की है और बताया है कि सक्षम कवि शब्द और अर्थ का ऐसा रमणीय संयोजन करते हैं, कि कविता की प्रभावसता में अप्रतिभा विस्तार आ जाता है। आस्वाद और सम्प्रेक्षण के धरातल पर शैली भाषा की सुनियोजित संरचना होती है। भाषा के प्रचलित अवयवों को ही अपनी मनीषा और क्षमता के सहारे मांज कर रचनाकार एक नई शक्ल में उपस्थित करता है। वर्ण, शब्द, वाक्य और मुहावरों, लोकोक्तियों, सूक्तियों और भाषा के प्रचलित–विचलित प्रयोगों द्वारा ही शैली का सर्जनात्मक आशय साकार होता है। बौद्धिक, भावात्मक और कल्पनात्मक अभिव्यक्ति को समुपस्थित करने में शैली के अनेक गुणों की चर्चा शास्त्राकारों ने की हैं वस्तुतः शैली की नक और थक बुनावट कविता का रूकृकार प्रस्तुत करती है।

कँवलनयन कपूर के काव्य का सार : कँवलनयन कपूर जी ने अपने काव्य साहित्य को दो काव्य संग्रहों में विभाजित किया है–1. ऐ समन्दर मेरे अन्दर 2. बौणियां किरणां और उदास गुलमेहर। अपने काव्य संग्रहों के माध्यम से उन्होंने समाज के विविध पक्षों को अभिव्यक्ति दी है। एक समन्दर मेरे अन्दर : एक समन्दर मेरे अन्दर कँवलनयन कपूर की एक सुप्रसिद्ध

रचना है, जो इनके लेखन कर्म के नये आयामों को प्रस्तुत करती है। इस संकलन की लम्बी कविताए कथ्य और शिल्प दोनों पक्षों में अपनी अलग पहचान लिए हुए हैं, प्रस्तुत काव्य–संग्रह पंद्रह कविताओं से सुसज्जित है जिसकी अधिकांश कविताए लेखक की भावनाओं से जुड़ी है। इन कविताओं का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है– 'दर्पण' कविता में कवि दर्पण की स्वयं से समानता करता है, उसका मानना है कि मन रूपी दर्पण हमें समाज, देश और व्यक्ति के दिल में छिपी ईर्ष्या–द्वेष, प्रेम–घृणा, वपफा बेवपफाई आदि दिखाता है, इसी प्रकार 'मन' कविता में कवि मन को नियन्त्राण में रखने का संदेश देता है क्योंकि हमारा चंचल मन हमेशा हमें भटकाता है। ईश्वर ने जिन कृंच तत्वों से मानव शरीर का निर्माण किया है। चंचल मन ने उन कृचों तत्वों के स्वरूप को ही बिगाड़ दिया है। 'मित्रा के नाम' कविता कवि के उस मित्रा की स्वार्थी मनोवृति पर व्यंग्य करती है, जो सारा जीवन साथ निभाने का वादा कर कवि को बीच राह में ही छोड़ गया। भौतिकतावादी युग की चकाचौंध में वह ऐसा कसा कि उसने कभी कवि की तरपफ मुड़कर भी नहीं देखा परन्तु कवि का मन उसे कह रहा है कि वापिस लौट आओ क्योंकि शब्दों को बोने और अर्थों को जीने में कितना आनंद होता है।

लरजती जिन्दगी में उन दिनों के पैबन्द

बदरंग कर गए चुनरिया का रंग, खो गया

आख मिचौली के खेल–सा वह खेल

चम्कृ–सी मुरझा गई।

सपनों की झार।

सामाजिकता :

कवि सामाजिक परिवेश परिस्थितियों और समस्याओं से प्रभावित होता है। वह अपने युग की समस्याओं का चित्राण मात्रा शब्दों द्वारा ही नहीं करता अपितु इनका निराकरण करने का भी प्रयास करता है। आज सामाजिक सम्बन्धों में निरन्तर दरारें पड़ती जा रही हैं। हर व्यक्ति अपनी–अपनी समस्याओं में उलझा हुआ है। इसी कारण सामाजिक जीवन व्यर्थ और अर्थहीन होता जा रहा है। आधुनिकता की अंधी दौड़ में मानव केवल अपनी सुख–सुविधाओं के साधन जुटाने में व्यस्त है। वह बिना संघर्ष के सब कुछ कृ लेना चाहता है। भौतिकतावाद के कारण मानव भी मशीनी जीवन जीता है। मानव छल, कपट, स्वार्थ आदि से ग्रस्त होकर एक दूसरे का संहार कर रहा है। आज वह धन की अंधी दौड़ के पीछे इतना व्यस्त है कि उसके कृस इतना समय नहीं है कि वह किसी के दर्द को समझ सके। कॅवलनयन कपूर ने समाज का यथार्थ चित्राण कृठकों के सामने प्रस्तुत किया है, क्योंकि साहित्य समाज का आइना होता है क्योंकि जैसा समाज होता है वैसा ही साहित्य होगा। उनका मानना है कि सामाजिक परिवेश ने मानव को भी परिवर्तित कर दिया है। मानव स्वार्थी हो गया है और वह भौतिकतावाद की अंधी दौड़ में मानवता को भी भूल गया है। वह सब कुछ कृकर भी और–और की चाह में दौड़ता ही जा रहा है। ऐसे समझदार लोगों से कवि मूर्ख बनना अधिक पसन्द करता है। कविता 'मूर्ख होने का सुख' में कहता है–

मैं मूर्ख हू आपके

बिल्कुल विरोधी ध्रुव जैसा

पर मेरे पैर–पेट

ठीक आप जैसे हैं।

ग ग ग

मैं मूर्ख हू

मैं नहीं जानता कुछ

सिवाये इसके कि

वैसे भी हो बस

रहे बनी मूर्खता मेरी।

प्रेम का चित्राण :

प्रेम ऊदय की वह रागात्मिकता वृति है, जिससे ऊदयगत अन्य कोमल मनोभाव जागृत होते हैं। वह समस्त कोमल वृतियों की प्रधान संचालिका है। उदय में प्रेम के प्रज्जवलित होने पर समस्त वृतिया प्रकाशमान हो उठती हैं। लोक और परलोक की समस्त वस्तुए अर्थात् चराचर सुन्दर और मोहक हो उठती हैं। प्रेम कोई बाहरी वस्तु नहीं है, बल्कि इसका विकास जीवन के बीच होता है। कॅवलनयन कपूर ने प्रेम के लगभग सभी रूकें का वर्णन किया है जैसे 'पूफल ककृस के' की निम्नलिखित पंक्तिया प्रेम के संयोग पक्ष का चित्राण करती है।

अहसासों के मान सरोवर तट पर

मेरे मस्तक पर अंकित

वह चुम्बन

ज्यों शिव–शीश चन्द्र

शंख पर धरे कमल

बंसी पर मोर पंख से

वे दिन सहवास के।

इसी प्रकार 'पिफर पुकारो' की निम्नलिखित पंक्तिया भी उल्लेखनीय हैं–

पहली–पहली छेड़छाड़

सपनीलो वायदों के पहाड़

गुनगुने आकाश और

ठण्डे–ठण्डे पफर्श

कुंवारे स्पर्श

चोरी–चोरी छिप–छिप

खाना और खिलाना

ऊँचा– ऊँचा गाकर

उसको बुलाना

आते ही उसके भूल जाना सारे काम।

प्रकृति–चित्राण :

प्रकृति शब्द 'प्र' उपसर्ग पूर्वक कृ धातु में कृतवाच्य में प्रत्यय और भाववाच्य में किन् प्रत्यय लगकर व्युत्पन्न हुआ है। जिसका अर्थ है स्वभाव, परती, आकाश, पंचभत, साधन आदि। ज्ञानकोश के अनुसार वह सारा दृश्य जगत् जिसमें हमें पशु–पक्षी वनस्पतिया अपने मौलिक स्वाभाविक रूप में दिखाई देती है। वह प्रकृति है। डॉकृ कँवलनयन कपूर ने प्रकृति के विभिन्न रूकृं को अपने काव्य में चित्रित किया है, जैसे प्रकृति का सम्बन्ध दर्शन से होने पर वह रहस्यमयी हो जाती है। 'पिफर पुकारो' कविता में कवि ने प्रकृति का सुन्दर रूप चित्रित किया है।

नारी चित्राण :

नारी शब्द की व्युत्पति 'नृ' अथवा 'नर' शब्द से हुई है। नृ+डीष = नारी–नरस्य समान ध्र्मा नारी, नृ+अ+डीन=नारी। स्त्राी को वामा कहा जाता है, क्योंकि वह सौन्दर्य बिखेरने वाली है। नारी प्रकृति रूकृ है, प्रकृति परमपुरुष की इच्छा का प्रतिपफलन है। नारी के बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। नारी के संयोग से ही संसार आगे बढ़ता है, नारी ईश्वर की सबसे सुन्दर कृति है वह हर रूप में पूजनीय है पिफर वह रूप पत्नी हो या प्रेमिका का, मा का या बहन या पिफर बेटी का। वह सात्विक है सौम्य है, और दिव्य है। नारी जीवनदायिनी है। वह ममतामयी है, वह श्रद्धा है, सारे संसार का कृलन करने वाली है। जीवन की निराशा में आशा का संचार करने वाली है। वह चिर संगिनी है, यही कारण है कि वह हर युग के साहित्य में स्थान कृती रही है। कॅवलनयन कपूर ने नारी के लगभग सभी रूकृं का वर्णन किया है।

सांस्कृतिक चेतना : सांस्कृतिक का सम्बन्ध संस्कार से है जिसका अर्थ है–संशोधन करना। सांस्कृतिक चेतना से अभिप्राय उस तत्व से है, जो हमारे चेतन्यमूलक जीवन और व्यक्तित्व को सुन्दर और सार्थक बनाता है। प्राचीनकाल से ही व्यक्ति अपनी संस्कृति से गहरा लगाव रखता आया है। भारतीय संस्कृति के प्रति हमारी एक विशेष प्रकार की आस्था रही है, क्योंकि यह विश्व संस्कृति का एक अंश या अंग रही है। समन्वय की भावना, सहिष्णुता, धार्मिक, सद्भावना उदारता, संयम तपस्या, त्याग के कारण भारतीय संस्कृति विश्व में शीर्षस्थ स्थान पर है। कॅवलनयन कपूर ने अपने काव्य में भारतीय संस्कृति का गुणगान अत्यन्त सुन्दर ढंग से किया है। भारत अनेकता में भी एकता का

प्रतीक है और जब–जब इस एकता और धर्म पर संकट आया है, तब–तब भगवान स्वयं अवतार लेकर इस संकट को दूर करते आए हैं। पिफर चाहे वह राम हो या कृष्ण। ईश्वर ने मानव का साथ दिया है और अन्याय का अंत किया है

दार्शनिकता :

दर्शन का अर्थ है देखना अर्थात् वास्तविक रूप में नेत्रा तात्विक दृष्टि से देखना या बाहरी व भीतरी नेत्राों के सम्मिलित योग से चरम या वास्तविक सत्य को देखना। कवि दार्शनिकता के माध्यम से अपने काव्य को पुष्ट व टिकाऊ बनाता है। वह इसमें जीवन और जगत सम्बन्धी प्रश्नों को उठाता है। कँवलनयन कपूर का दर्शन गूढ़ होने पर भी सरलता लिए हुए हैं, यह ग्राह्य और आकर्षक है। 'कृष्ण–आत्म सृजन' की पीड़ा इसका जीवन्त उदाहरण है–

पिफर

याद हो आए

सगे संबंधी, मित्रा, हितैषी सब

जाती–जाती चेतना बोल उठी

सर्वधर्मान परित्यज्य मामेकम् शरण . . .

और

नीले पड़े होठों पर

दौड़ गई व्यंग्य भरी मुस्कान

बस।

एक महाशून्य में

एक न्यून शून्य जा मिला

छूट गई उमंग

टूट गया खेल।

निष्कर्ष :

अतः हम निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि किसी भी काव्य की सपफलता असपफलता कवि की निजी अनुभूति के पश्चात् उसकी अनुभूतियों को व्यक्त करने की क्षमता पर निर्भर करती है। कवि किसी–न–किसी रूप में अपने काव्य में उपस्थित रहता है। आलोच्य कवि कँलनयन कपूर के काव्य ने भी उन्हें समकालीन काव्य परिदृश्य में अपनी एक स्वतन्त्रा पहचान स्थापित की है। उनके काव्य संकलन 'एक समन्दर मेरे अन्दर' और 'बौणिया किरणा और उदास गुलमोहर' में देश में व्याप्त अनेक बुराइयों पर व्यंग्य किया है वही इनके काव्य का मूल स्वर प्रेम रहा है। प्रेम के साथ समाज, दर्शन नारी, सांस्कृतिक चेतना, आर्थिक वैषम्य, वैयक्तिक संवेदना का वर्णन किया है।

संदर्भ ग्रंथ–सूची

कद्ध आधर ग्रन्थ :

1. नाटक

www.ignited.in

कँलनयन कपूर, पंछी–तीर्थम्, हरमन पब्लिशिंग हाऊस, नारायणी, नई दिल्ली, 1978

कँलनयन कपूर, शव–पूजा, माध्व प्रकाशन, दिल्ली, 2000

कँलनयन कपूर, प्रकृति–पर्व, माध्व प्रकाशन, दिल्ली, 2000

कँलनयन कपूर, आओ मेरे साथ, आत्मा राम एण्ड सन्स, दिल्ली, 1990

2. काव्य–संग्रह :

कँलनयन कपूर, बौणियां किरणां और उदास गुलमोहर, श्री प्यारेलाल गुप्त, पी.एल, प्रिंटर्स, लुध्याना, 1976

कँलनयन कपूर, एक समन्दर मेरे अन्दर, माध्व प्रकाशन, ग्लो टाईम प्रिन्टर्स, यमुनानगर, 2001

3. उपन्यास :

कँलनयन कपूर, भारत–सम्राट, जाह्नवी पत्रिका में धरावाहिक रूप में छकृ, 1967–60

Corresponding Author

Dr. Hemlata Sharma*

Assistant Professor, J. C. College, Assandh, Karnal, Haryana

E-Mail – arora.kips@gmail.com